चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	23.8.23	4	3-6

हकृवि ने गाजर घास उन्मूलन अभियान चलाया

जागरण संवाददाता, हिसार : गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है। साथ ही मनुष्य एलर्जी, एग्जिमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा रहे।

हकृवि में आयोजित गाजर घास जागरूकता सप्ताह के दौरान बैनर के साथ मौजूद मुख्यातिथि डा. जीतराम शर्मा व अन्य। ●पीआरओ

साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डा. टोडरमल पुनिया भी उपस्थित रहे।

डा. जीतराम शर्मा ने कहा कि गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गेंदे का पौधा लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि को रोका जा सकता है।

डा. टोडरमल पुनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार माह में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है।

सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. संजय कुमार ठकराल ने कहा कि सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास की समस्या को नियंत्रण किया जा सकता है, इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को गाजर घास मुक्त करने में सहयोग देना होगा। इस दौरान डा. वीरेंद्र सिंह हुड्डा, डा. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डा. सुरेश, डा. प्रवीन कुमार, डा. उमा देवी, डा. आरएस दादरवाल, डा. सतपाल, डा. मूली देवी, डा. सुशील सिंह, डा. झाबरमल, डा. नीलम, डा. कविता, डा. पी कीर्ति, डा. निधि काम्बोज, डा. पारस काम्बोज, डा. एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	23.8.23	5	5-8

हकृवि ने गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किसानों को गाजर घास से फसलों व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया

हिसार, 22 अगस्त (विरेन्द्र वर्मा): गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी, एग्जिमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनियां भी उपस्थित रहें। मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि

हकृवि में आयोजित गाजर घास जागरुकता सप्ताह के दौरान बैनर के साथ मौजूद मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा व अन्य।

गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गैंदे का पौधा लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि को रोका जा सकता है। अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनियां ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार माह में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार ठकराल ने उपस्थित वैज्ञानिकों व अनुसंधान क्षेत्र के सहायकों को प्रेरित करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास की समस्या को नियंत्रण किया जा सकता है, इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को गाजर घास मुक्त करने में सहयोग देना होगा। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. वीरेंद्र सिंह हुड्डा ने किया एवं गाजर घास को पहचानें और इसकी रोकथाम से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी भी साझा की। इस अवसर पर डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. सुरेश, डॉ. प्रवीन कुमार, डॉ. उमा देवी, डॉ. आर.एस. दादरवाल, डॉ. सतपाल, डॉ. मूली देवी, डॉ. सुशील सिंह, डॉ. झाबरमल, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. पी.कीर्ति, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. पारस काम्बोज एवं डॉ. एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	23.8.23	10	6-8

किसानों को गाजर घास से फसलों व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे किया जागरूक

- हकृवि ने गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया।

इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनियां भी उपस्थित रहें।

हिसार। हकृवि में आयोजित गाजर घास जागरूकता सप्ताह के दौरान बैनर के साथ मौजूद मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा व अन्य। फोटो: हरिभूमि

मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	23-8-23	2	7

हकृवि ने गाजर घास जागरुकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

हिसार, 22 अगस्त (ब्यूरो): गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी, एग्जिमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	23.8.23	3	5-6

गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूकता अभियान चलाया

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूकता अभियान चलाया गया। विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे।

अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गैंदे के पौधे लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि को रोका जा सकता है। संवाद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	22.08.2023	--	--

हकृवि ने गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

वैज्ञानिकों ने किसानों को गाजर घास से फसलों व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की दी जानकारी

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी, एग्जिमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहें।

मुख्यातिथि ने संबोधित करते हुए कहा कि गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गैंदे का पौधा लगाकर इसके फूटाव व वृद्धि को रोका जा सकता है।

हकृवि में आयोजित गाजर घास जागरूकता सप्ताह के दौरान बैनर के साथ मौजूद मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा व अन्य।

अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार माह में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया।

इस अवसर पर डॉ. संजय कुमार ठकराल, डॉ. वीरेंद्र सिंह हुड्डा, डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. सुरेश, डॉ. प्रवीन कुमार, डॉ. उमा देवी, डॉ. आरएस. दादरवाल, डॉ. सतपाल, डॉ. मूली देवी, डॉ. सुशील सिंह, डॉ. झाबरमल, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. पी.कीर्ति, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. पारस काम्बोज एवं डॉ. एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	22.08.2023	--	--

हकृवि के वैज्ञानिकों ने किसानों को गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में किया जागरूव

पांच बजे न्यूज

हिसार। गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी, एग्जिमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहे।

मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से अंकुरित व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गेंदे का पौधा लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि को रोका जा सकता है। अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार माह में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पौधा संभवत देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह शाक एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की सम्भावना पैदा हो गई है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचाने और मानव स्वा को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित ! जाने पर बल दिया। सस्य विज्ञान विभाग विभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार ठकराल उपस्थित वैज्ञानिकों व अनुसंधान क्षेत्र सहायकों को प्रेरित करते हुए कहा सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास समस्या को नियंत्रित किया जा सकता इसलिए हमें इस अभियान का हि बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को ग घास मुक्त करने में सहयोग देना ह कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. वीरेंद्र ! हुड्डा ने किया एवं गाजर घास को पह और इसकी रोकथाम से जुड़ी महत्व जानकारी भी साझा की।

इस अवसर पर डॉ. सुरेंद्र कुमार प डॉ. सुरेश, डॉ. प्रवीन कुमार, डॉ. उमा ? डॉ. आर.एल. दादरवाल, डॉ. सतपाल, मुली देवी, डॉ. सुशील सिंह, डॉ. झाबर डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. पी.कीर्ति, निधि काम्बोज, डॉ. पारस काम्बोज एवं एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	22.08.2023	--	--

हकृवि ने गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्नमूलन अभियान चलाया

हिसार, 22 अगस्त (समस्त हरियाणा न्यूज)। गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी, एग्जिमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहे। मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गेंदे का पौधा लगाकर इसके फैलाव व वृद्धि को रोका जा सकता है। अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार माह में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पौधा संभवतः देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह शाक एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की सम्भावना पैदा हो गई है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया। सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार ठकराल ने उपस्थित वैज्ञानिकों व अनुसंधान क्षेत्र के सहायकों को प्रेरित करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास की समस्या को नियंत्रण किया जा सकता है, इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को गाजर घास मुक्त करने में सहयोग देना होगा। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. वीरेंद्र सिंह हुड्डा ने किया एवं गाजर घास की पहचान और इसकी रोकथाम से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी भी साझा की। इस अवसर पर डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. सुरेश, डॉ. प्रवीण कुमार, डॉ. उमा देवी, डॉ. आर.एस. दादरवाल, डॉ. सतपाल, डॉ. पूनी देवी, डॉ. सुशील सिंह, डॉ. झाबरमल, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. पी.कीर्ति, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. पारस काम्बोज एवं डॉ. एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर न्यूज	22.08.2023	--	--

'गाजर घास पौधे का प्रवेश भारत में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था'

नभ-छोर न्यूज ▶▶ 22 अगस्त

हिसार। गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी, एग्जिमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहे। मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा ने कहा कि गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गेंदे का पौधा लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि को रोका जा सकता है। डॉ. टोडरमल पूनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार माह में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पौधा संभवतः देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हैक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह शाक एक स्थान पर जम जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जमने नहीं देती है जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की सम्भावना पैदा हो गई है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया। सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार ठकराल ने उपस्थित वैज्ञानिकों व अनुसंधान क्षेत्र के सहायकों को प्रेरित करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास की समस्या को नियंत्रण किया जा सकता है, इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को गाजर घास मुक्त करने में सहयोग देना होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	22.08.2023	--	--

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन से विद्यार्थियों को मिली स्वावलंबन की नई दिशा

सम्मेलन में उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने लिया भाग

उद्यमियों को सम्मानित करते राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। स्वावलंबी भारत अभियान के अंतर्गत विश्व उद्यमिता दिवस के अवसर पर उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में 120 उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के 2000 से अधिक विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस उद्यमिता सम्मेलन में शिरकत करने वाले विद्यार्थियों को स्वावलम्बन की नई दिशा मिली है। स्वावलंबी भारत अभियान के तहत युवाओं को आत्मनिर्भर व सशक्त बनाना ही मूल उद्देश्य है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में मुख्यातिथि राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय, अध्यक्ष हकृवि के कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज, प्रेरक वक्ता दीपक शर्मा व भारत भूषण के प्रेरणादायी वक्तव्य से विद्यार्थियों व उद्यमियों को काफी कुछ नया सीखने को मिला।

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन की सफलता से उत्साहित स्वदेशी जागरण मंच के प्रांतीय प्रचार प्रमुख अनिल गोयल ने बताया कि इस सम्मेलन में हकृवि प्रशासन के साथ-साथ संजीव शर्मा, राम राकेश जांगड़ा, डॉ. अजीत, मीना जैन, ममता शर्मा, निर्मला बादल, भारत शर्मा, प्रदीप बामरल, डॉ. सतीश व डॉ. जनजीत सहारण विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सम्मेलन में स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय पदाधिकारी दीपक शर्मा ने कहा कि युवा उद्यमिता की तरफ बढ़ें। गोयल ने बताया कि राज्यपाल ने सभी उद्यमियों को संयुक्त रूप से सम्मानित भी किया।

इस समारोह में हिसार के गवर्नमेंट कॉलेज, जाट कॉलेज, डीएन कॉलेज, पॉलिटेक्निक, गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज, एफसी कॉलेज, कैंपस स्कूल, विभिन्न गवर्नमेंट स्कूल, इंपीरियल कॉलेज, ओडीएम कॉलेज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व रोजगार प्रशिक्षण केंद्र सहित कई शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	22.08.2023	--	--

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन से विद्यार्थियों को मिली स्वावलंबन की नई दिशा

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने लिया हिस्सा

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 22 अगस्त : स्वावलंबी भारत अभियान के अंतर्गत विश्व उद्यमिता दिवस के अवसर पर उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में 120 उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के 2000 से अधिक विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस उद्यमिता सम्मेलन में शिरकत करने वाले विद्यार्थियों को स्वावलंबन की नई दिशा मिली है। स्वावलंबी भारत अभियान के तहत युवाओं को आत्मनिर्भर व सशक्त बनाना ही मूल उद्देश्य है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में मुख्यातिथि राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय, अध्यक्ष हकृवि के कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज, प्रेरक वक्ता दीपक शर्मा व भारत भूषण के प्रेरणादायी वक्तव्य से विद्यार्थियों व उद्यमियों को काफी कुछ नया सीखने को मिला। उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन की सफलता से उत्साहित स्वदेशी जागरण मंच के प्रांतीय प्रचार प्रमुख अनिल गोयल ने बताया कि इस सम्मेलन में हकृवि प्रशासन के साथ-साथ संजीव शर्मा, राम राकेश सांगड़ा, डॉ. अजीत, मीना जैन, ममता शर्मा, निर्मला बाहल, भारत शर्मा, प्रदीप बामल, डॉ. सतीश व डॉ. बलजीत सहारण विशेष रूप से उपस्थित रहे। सम्मेलन में स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय पदाधिकारी दीपक शर्मा ने कहा कि युवा उद्यमिता की तरफ बढ़ें। उन्होंने कहा कि संगठित क्षेत्र व सरकारी मिलाकर कुल 3 करोड़ 80 लाख लोगों को ही रोजगार दे रहे हैं। देश की जनसंख्या 142 करोड़ है। इसका तात्पर्य यह है कि अन्य लोगों को असंगठित क्षेत्र ही रोजगार देता है। उन्होंने कहा कि दुनिया बदल रही है, इसलिए असंगठित क्षेत्र को बदलती दुनिया के अनुसार संगठित होना पड़ेगा अन्यथा उनका व्यापार विदेशी कॉर्पोरेट के हाथ में चला जाएगा। उन्होंने स्वावलंबी भारत अभियान से अधिक से अधिक लोगों के जुड़ने की अपील भी की। दीपक शर्मा ने फर्श से अर्श पर पहुंचे विभिन्न उद्यमियों का उदाहरण देते हुए स्वावलंबन की तरफ कदम बढ़ाने का आह्वान किया। अनिल गोयल ने बताया कि राज्यपाल ने सभी उद्यमियों को संयुक्त रूप से सम्मानित भी किया। इस समारोह में हिसार के गवर्नमेंट कॉलेज, जाट कॉलेज, डी एन कॉलेज, पोलिटेक्निक, गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज, एफ. सी. कॉलेज, कैंपस स्कूल, विभिन्न गवर्नमेंट स्कूल, इंपीरियल कॉलेज, ओडीएम कॉलेज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व रोजगार प्रशिक्षण केंद्र सहित कई शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।